

Teacher - A. K. Sinha

Topic - अभेदन रित्तन के प्रमाण । पृष्ठ - 1

Freud के अनुसार topographical aspects of mind के अन्तर्गत अभेदन मन मस्तिष्क का सबसे बड़ा भाग है। इसमें पूर्ण से सम्बन्धित दमित इच्छाओं का भण्डार होता है। इसे न तो वास्तविक निरीक्षण अथवा अन्वेषण से ज्ञान नहीं किया जा सकता है क्योंकि ये दमित इच्छाएँ सदैम रूप में किसी न किसी रूप में व्यक्त होकर प्रकट हो जाते हैं। इस तरह व्यक्त होकर पर अभेदन के स्वरूप स्पष्ट नहीं होता है। परन्तु इसका स्वरूप है इस सम्बन्ध में Freud द्वारा निम्नलिखित प्रमाण प्रस्तुत किया जाता है।

1. स्वप्न (Dream) - Freud ने स्वप्न विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि "स्वप्न अभेदन का राजकीय भाग है"। यैके स्वप्न निद्रा अवस्था में होने वाली घटना है। ~~स्वप्न~~ नींद की अवस्था में चेतन स्तर भी सुप्तावस्था में रहता है अतः यह निष्क्रिय रहता है। परिणाम स्वरूप चेतन मन के प्रतिबन्धक कर्तव्य पर गाने हैं। इसका कारण उक्त दुरु अभेदन में दमित दमित इच्छा-प्रादुर्भाव अथवा वास्तविक रूप वदक रूप इसमें व्यक्त होकर होते हैं। किन्तु इसकी अनुभूति ही स्वप्न की घटना होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वप्न में दमित होने वाली घटना व्यक्तिके अभेदन का ही विषय होता है। इस तरह अभेदन की सत्ता प्रमाणित होता है।

2. Hypnosis (सम्मोहन) :- सम्मोहन भी अभेदन की सत्ता को प्रमाणित करता है। सम्मोहन एक प्रकार मोटावस्था या सम्मोहि की अवस्था है। इस अवस्था में व्यक्ति की चेतन की अवस्था सुप्त हो जाती है। परिणाम स्वरूप अभेदन के प्रवाह के रोक-टोक के आलापी हो पाते होते हैं। इस तथ्य का निरीक्षण-परीक्षण Freud ने Mystical के शब्दों पर किया है। उन्होंने देखा कि Mystical के शब्दों सम्मोहित होने पर कोई नार्स या कर्म करना है किन्तु जो वह सम्मोहित होने के पूर्व कोई नार्स या कर्म करता था। इससे स्पष्ट होता है कि मन का एक भाग सक्रिय है जो चेतन की निष्क्रिय अवस्था में व्यक्ति को प्रभावित करता है। इस प्रकार सम्मोहन भी अभेदन की सत्ता को प्रमाणित करने का एक कारक है।



3- सम्मोहन की आद की अवस्था : -

सम्मोहन की अवस्था में सम्मोहनकर्ता यदि यह आदेश देता है कि दूसरे दिन रात के बीच आठ बजे बिना उभे telephone No पर मिली जाये तो वह आठ बजे बिना उभे दूसरे दिन सम्मोहन की अवस्था समाप्त हो जायेगी। उक्त telephone No पर रात को (36 घण्टों के अंतराल) कारण पूछने पर यह पूरी रात बजाये भी आवाज नहीं आयेगी। ऐसा व्यवस्था होता है कि सम्मोहन की अवस्था में उक्त आदेशन मात्र सक्रिय रहता है, जिसका प्रभाव सम्मोहन की अवस्था समाप्त होने के बाद भी रहता है और यह आदेशन हम से उक्त निर्देशानुसार काम करता है। अतः एषाद होता है कि सम्मोहन के बाद आदेशन का रिक्त रहता है।

4. दैनिक जीवन की मनोव्यवस्था : -

आधारतः यह देखा जाता है कि व्यक्ति अपने सामान्य जीवन कुछ न कुछ सामान्य गलतियाँ कर देता है जो ठीक ठीक में हो जाता है। जिसे लिखने की गलतियाँ, बोलने की गलतियाँ, पहचानने की गलतियाँ इत्यादि। इन गलतियों को एक लंबाई या महत्वहीन समझते हैं। लेकिन Freud ने इन गलतियों को संकाश तथा महत्वपूर्ण बताया है। ये इन गलतियों को आचेतन की उपाय मानते हैं। जैसे :- Freud ने एक ऐसी महिला का उदाहरण प्रस्तुत किया है जो एक व्यक्ति से प्रेम करती थी और उससे विवाह करना चाहती थी। परन्तु दुर्भाग्यवश वह प्रेमी एक दुर्घटना में मर जाता है। इसके बाद वह महिला जीवन भर पर्यंत अविवाहित ही रहने का मन बना लिया। परन्तु देव दायता के बाद वह रात भी नींद के लिए आवेदन करती थी और अपने माँ के पहले 'भीमती' लिखने की गलती का कहती थी। उक्त गलती का कारण यह था कि अपने को विवाहित महिला के रूप में देखने की उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी और विवाह के पूर्व ही उसकी यह इच्छा आचेतन में दमित हो गई जिसकी पूर्ति 'अचेतन महिला' के नाम पर माँ के पहले 'भीमती' लिखने के रूप में हो जाता था। इससे Freud महोदय ने इसे आचेतन महिला की प्रभावशालिता के रूप में साबित करने में सफल हुए।

5. निद्राग्रगण (Somnambulism) : -

मिली-मिली व्यक्ति के नींद की अवस्था में जाग कर कुछ विशेष प्रकार की क्रियाएँ करने की आदत पाई जाती है। इस लक्षण को ही निद्राग्रगण या स्वप्न कालिना कहा जाता है। ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति सुप्तावस्था में ही-अपने काम का शील पृष्ठ-3 पर



निष्पादन का पूरा सौंजाना है। इसके बाद उठने या उठे जागने  
 द्वारा किये गये कर्मों की जानकारी कुछ भी नहीं रहती है।  
 जैसे :- एक निष्पान्त प्रति दिन आधी रात को उठकर बाहर  
 पार्क के नदी किनारे जाकर धोने बैठकर जाग जाया जाता था।  
 इसके बाद वह पुनः आकर सो जाता था। सुपुटे उठने पर धोके  
 लोगों द्वारा बुझने पर अगमिता तथा आश्चर्य प्रकट करता था।  
 अब प्रश्न यह है कि ऐसी क्रियाओं का संचालन कहाँ से होता  
 है? इसके महत्व होता है कि- यदि निद्रा अवस्था में व्यक्ति  
 की चेतना सुप्त रहती है, इसलिए अचेतन रूप से ही इन क्रियाओं  
 का संचालन होता है। 'नीलकण्ठ' पिता में भी वहीदा रहना।  
 इसी निद्रावस्था के विकार होने का दुःख का प्रिलक्षण  
 किता जाया है। इसे सिद्ध होता है कि अचेतन सिल का  
 प्रभाव है।

6. - एनेस्थेसिया का प्रकार - एनेस्थेसिया एक रसायनिक  
 द्रव्य है, जिसका प्रयोग व्यक्ति के अचेतनी की अवस्था में लाने  
 के लिए होता है। एनेस्थेसिया से व्यक्ति की चेतना शुन्य हो जाती  
 है। पान्त्र प्राप्त ऐसा देखा जाता है कि एनेस्थेसिया की दवा  
 में व्यक्ति कुछ क्रिया करता है - जैसे वह कुछ बातें बोलता है, या  
 अन्तर्गत प्रकार की शारीरिक गति करता है। इससे यह  
 प्रभावित होता है कि एनेस्थेसिया की अवस्था में चेतना के  
 शुन्य होने के बावजूद व्यक्ति के कौलने या कुछ विशेष  
 प्रकार की गति करने की क्रियाएँ अचेतन मन द्वारा ही  
 संचालित होता है।

7. हीक अन्तर्गत अमानक नींद का दूर जाना :-  
 प्राप्त व्यक्ति का सोने तथा उठने का समय नियमित तथा  
 निश्चित होता है। पान्त्र कभी-कभी ऐसे अवसर भी आते हैं,  
 जब उसके सोने के निश्चित अवधि पूरा होने के पूर्व ही उठने  
 या संकल्प या निश्चय- कला होता है। ऐसे अवसरों पर निश्चित  
 समय पर सो जाने के बाद व्यक्ति सुनिश्चित किये गये समय पर  
 स्वतः जाग जाता है। इस प्रकार सुप्तावस्था में स्वतः निश्चित  
 समय पर नींद का दूर जाना अचेतन सिल का ही परिणाम  
 का ही परिणाम है।

8. किसी रोग का अमानक रूप स्वतः समाधान होना :-  
 व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसे भी अवसर आते हैं जब व्यक्ति  
 द्वारा किसी विशेष प्रकार की रोग का समाधान किये की पूरी  
 कोशिश करता है पान्त्र रोग का समाधान नहीं हो पाता है कोई  
 अन्तः निराश होकर उठकर रोग का समाधान पर सोचता या विचार करता  
 वह ही होता है। पान्त्र कुछ देर बाद उठकर रोग का  
 शेष पृष्ठ-4 पर



समाधान अमानस मुक्त जाता है। ऐसा इसलिए होता है

कि जब व्यक्ति उस समस्या को जो चेतन क्षेत्र है तो चेतन क्षेत्र को छोड़ना बंद  
कर देता है, तब उसका अचेतन मन ~~समाधान~~ को धारण होकर  
उसकी समस्या के समाधान में उद्युक्त मुक्त (insight)  
उत्पन्न करता है जो समस्या का समाधान मिल जाता है।  
इस आधार पर भी अचेतन स्थिति प्रभावित होता है।

9. - मानसिक रोग (Mental disease) :- Freud ने  
मानसिक रोगों का मुख्य कारण अचेतन में दमित आतंरिक  
दमित इच्छा-प्रवाह का बताया है। उनके अनुसार अचेतन में  
दमित इच्छा-प्रवाह चेतन मन के प्रतिवन्धकों को काटकर बना का  
मानसिक रोगों के लक्षणों के समूह में प्रकट होते हैं। 36 प्रकार  
मानसिक रोग की अचेतन के स्थिति को प्रभावित होता है।

10. - धक्का हर की अवस्था :- धक्का हर की अवस्था में व्यक्ति का  
चेतन मन का संतुलन बिगड़ जाता है परिणाम स्वरूप व्यक्ति कुछ  
ऐसी ~~वस्तु~~ वस्तु को धक्का देता है या किपाएँ का देता है जो दूसरे  
व्यक्ति तथा स्वयं व्यक्ति विशेष के लिए आश्चर्य का विषय होता  
है परन्तु धक्का हर की अवस्था समाप्त होने पर व्यक्ति उन्हें पुनः  
मूल जाता है। इसका कारण यह है कि धक्का हर की अवस्था में  
चेतन के प्रतिवन्धक ढीले पड़ जाते हैं परिणामस्वरूप अचेतन की  
व्यक्ति प्रकाश में आ जाती है जो धक्का हर की अवस्था समाप्त हो जाने  
के बाद चेतनापला पुनः संतुलित हो जाती है जिससे चेतन मन  
के प्रतिवन्धक धीरे धीरे कार्य बरों लगते हैं। परिणामस्वरूप अचेतन की  
वस्तु की चेतन नहीं रह जाती है जो व्यक्ति उन्हें मूल जाता है।

11. - मनोविश्लेषण की सफलता :- Freud द्वारा प्रतिपाद्य  
(Psycho-analytic method) मनोविश्लेषण विधि का मूल  
आधार अचेतन की अवधारणा ही है। इस विधि के माध्यम  
मानसिक रोगियों की निरिक्षा है स्वतंत्र-साहित्य-प्रविधि का  
अभोग किया जाता है जो काफी सफल प्रविधि साबित हुई है।  
इस प्रविधि में रोगी अपनी भावों, विचारों तथा संवेगों को  
स्वतंत्रता पूर्वक व्यक्त करता जाता है। इसी क्रम में रोगी धीरे-धीरे  
ऐसी वस्तु या किपाओं को का देता है जो उसकी चेतन में नहीं  
होता है। इस प्रकार रोगी द्वारा प्रकट की गयी वस्तु अचेतन  
के विषय से ही व्यक्त होती है जो कि अचेतन मन  
के स्थिति को प्रभावित होता है।

The End